बैठ घोड़ा पानी पी

बच्चों के खेल-गीत

संकलनः मनोज साहू 'निडर'
चित्रः विवेक वर्मा

एकलव्य

बैठ घोड़ा पानी पी

बच्चों के खेल-गीत

संकलन : मनोज साहू 'निडर'

एकलव्य का प्रकाशन

बैठ घोड़ा पानी पी

Baith Ghoda Pani Pee

बच्चों के खेल-गीत

संकलन: मनोज साहू 'निडर'

चित्र: विवेक वर्मा

पहला संस्करणः सितम्बर 2006 / 3000 प्रतियाँ

64 gsm मेपलिथो और 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-83-9

मूल्यः 18.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-7/एच आई जी 453

अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोन : (0755) 246 3380 फैक्स : (0755) 246 1703

www.eklavya.in

ई मेल : bhopal@eklavya.in

सम्पादकीय : books@eklavya.in

मुद्रकः श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन : 0755 - 427 5001

अपनी बात

यह संकलन ग्रामीण अंचल में बिखरे हुए बाल-गीतों व खेल-गीतों को बटोरने के एक छोटे-से प्रयास का फल है। इससे पहले हमने इसी प्रयास पर आधारित एक अन्य पुस्तक *अक्कड़-बक्कड़* भी प्रकाशित की है। यह प्रयास इसलिए है, ताकि आज की भागम-भाग ज़िन्दगी और आधुनिकता के प्रभाव से कमरे में कैद होते बचपन के बीच माटी की गन्ध में रचे-बसे ये पारम्परिक गीत कहीं गुम न हो जाएँ। इनमें अधिकतर गीत ऐसे हैं जिन्हें हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाते और सुनते चले आ रहे हैं। कुछ ऐसे गीत भी हैं जो वर्तमान से प्रभावित हुए हैं। ये बे-तुके, ऊट-पटाँग और अर्थहीन गीत बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का नमूना तो हैं ही, साथ ही बच्चों में भाषाई कौशल विकसित करने के सशक्त माध्यम भी हैं। यदि इन गीतों को बाल अभिव्यक्ति की बुनियाद कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

हमारे देश में बच्चों के लिए बड़ों द्वारा बहुत कुछ लिखा जा रहा है। बाल साहित्य में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा यह क्रम निरन्तर जारी है। पता नहीं यहाँ संग्रहित रचनाएँ बाल-गीतों के मानदण्डों को पूरा करती भी हैं या नहीं। किन्तु इतना तय है कि तुकबन्दी सरीखी ये रचनाएँ बच्चों को बहुत पसन्द हैं। इनमें वह सब कुछ है जो उन्हें अच्छा लगता है। इनमें से अधिकांश गीतों को बच्चों ने खेलते-कूदते अपने लिए स्वयं रचा भी है। इस संग्रह में मेरा अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है इन बच्चों का ही है, जिसे समेटकर मैं उन्हें ही सौंप रहा हूँ।

आशा है यह संकलन बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी पसन्द आएगा।

मनोज साहू ‘निडर’
बाबई, होशंगाबाद

पाठशाला

गुरुजी

गुरुजी नमस्ते,
पान खाओ सस्ते।
पान में गिरी इल्ली,
हम जाएँगे दिल्ली।
दिल्ली में आलू सस्ते,
गुरुजी नमस्ते।

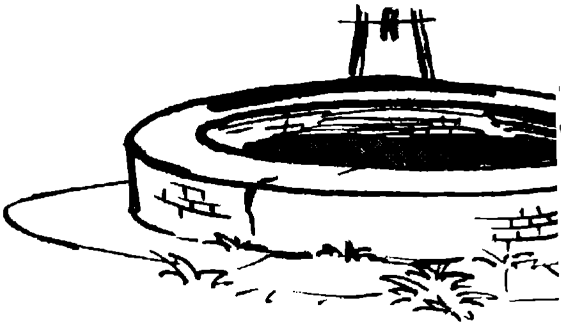

पट्टी

कुएँ का पानी
कुएँ में जाए।
मेरी पट्टी सूख जाए।
नदी का पानी
नदी में जाए।
मेरी पट्टी सूख जाए।

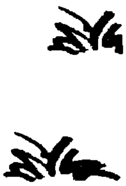

भात का पहाड़ा

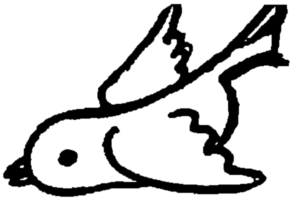

भात एकम् भात,
भात दूनी दाल।
भात तिया तरकारी,
भात चौके चटनी।
भात पंजे पापड़,
भात छक्के छाछ।
भात सत्ते सतुआ,
भात अट्ठे अचार।
भात नमे नमकीन,
भात दहाई दही।
तब भोजन सही।

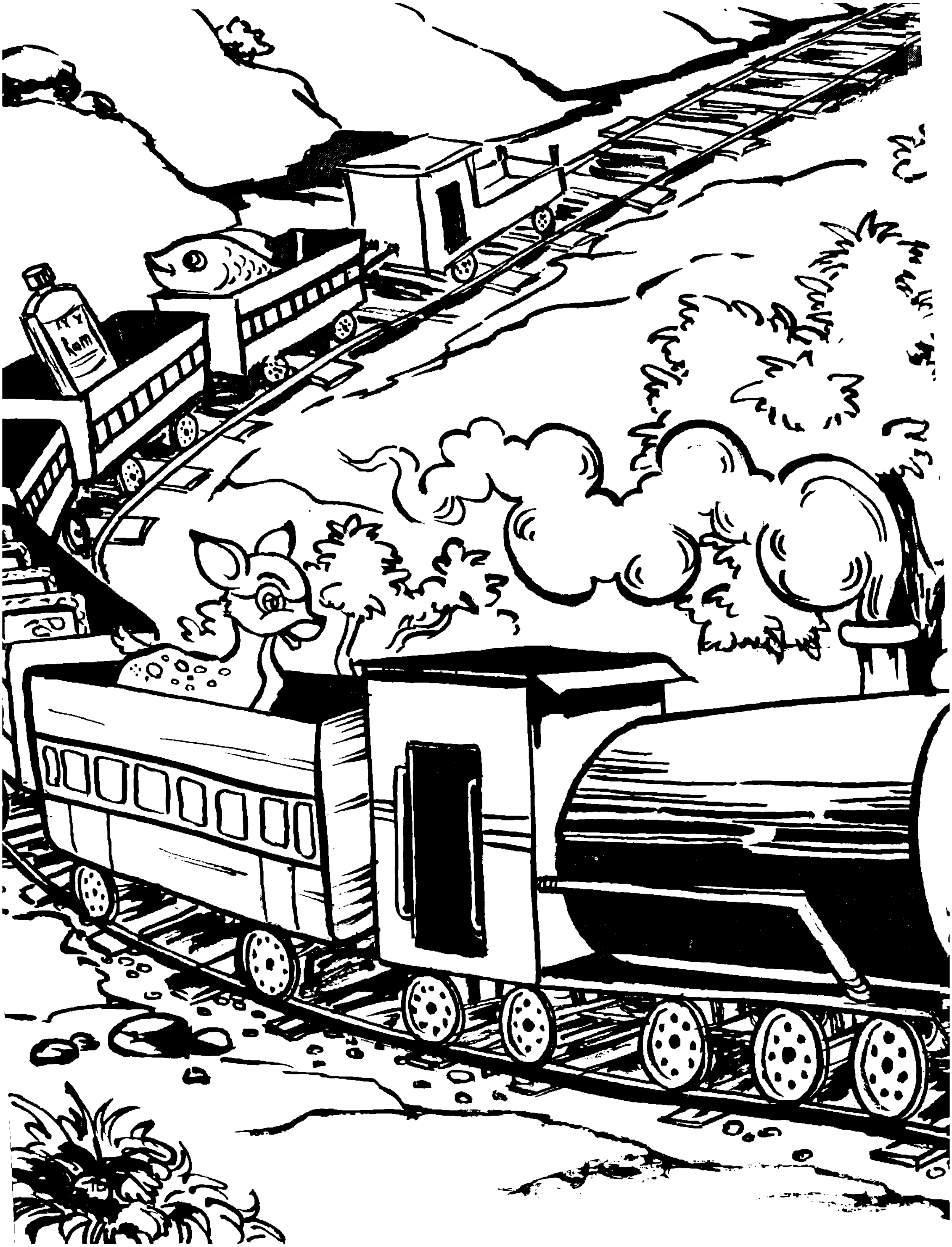

आम-चूली

आम चूली, छप्पन छुरी,
गरम मसाला, पानी पुरी।
दस पत्ते तोड़े,
एक पत्ता कच्चा।
हिरण का बच्चा।
हिरण बैठी रेल में,
रेल बोली छुक-छुक।
हमने खाए बिस्कुट।
बिस्कुट थे खराब।
हमने पी शराब।
शराब में मछली,
मछली में काँटा।
तेरा मेरा चाँटा।

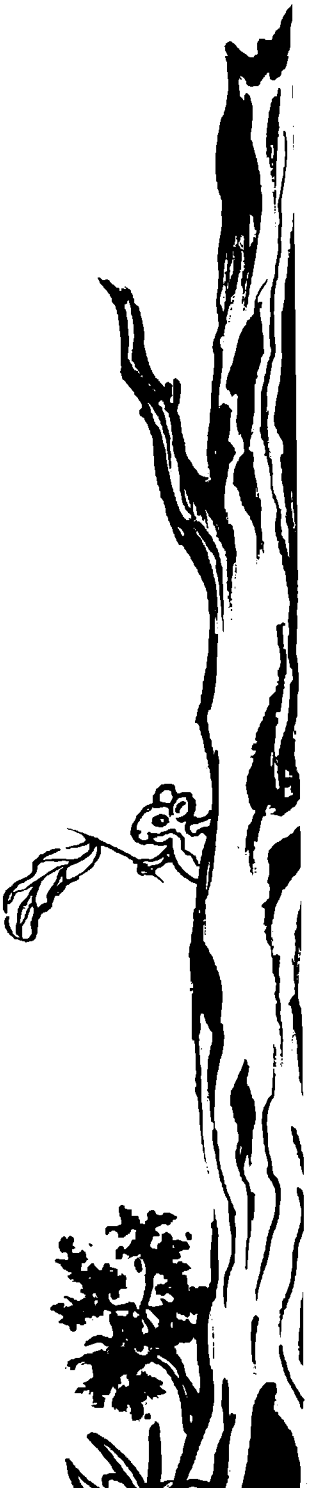

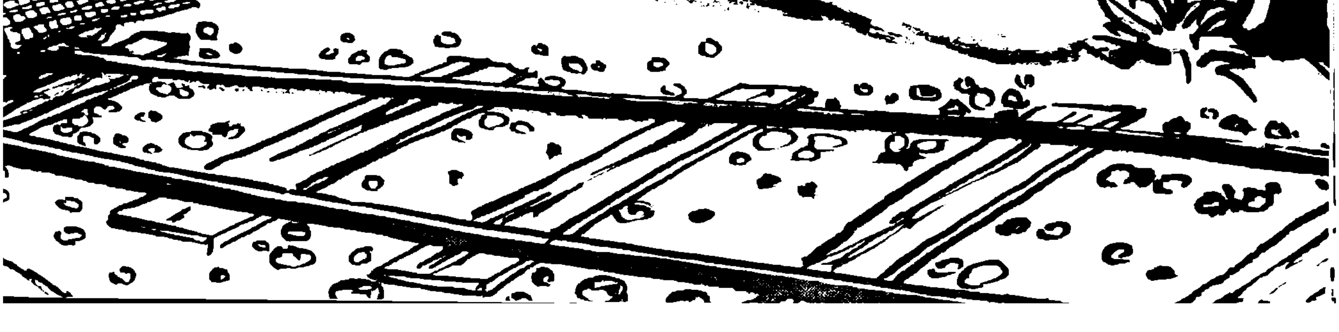

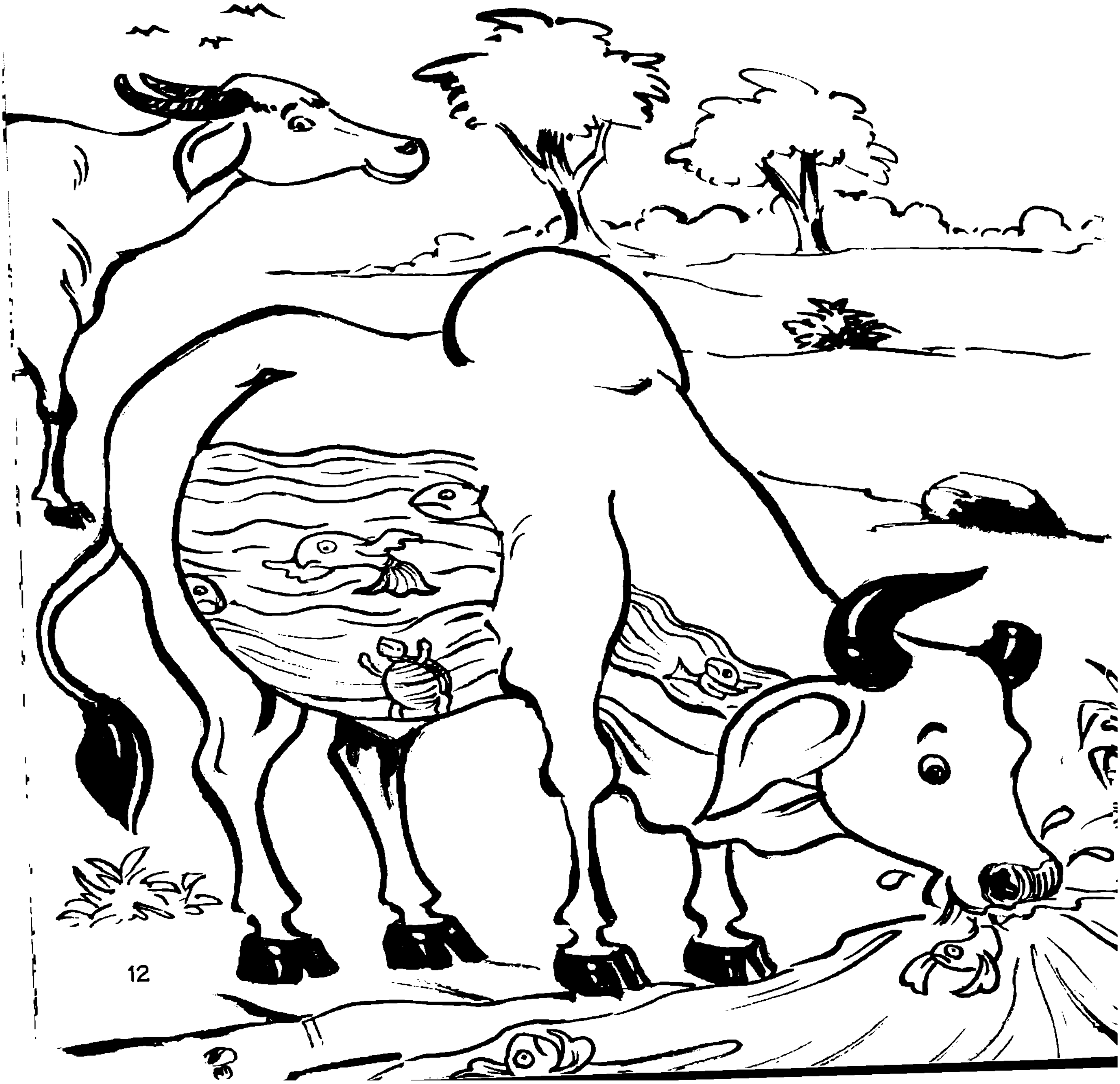

भूरी भैंस

भूरी भैंस मदन पड़िया,
चिकी जमाई नौ हड़िया।
चिकी कहाँ गई?
बिल्ली ने पी गई।
बिल्ली कहाँ गई?
बिठा में घुस गई।
बिठा कहाँ गओ?
राख हो गओ।
राख कहाँ गई?
नदी में बह गई।
नदी कहाँ गई?
डूण्डा बैल पी गओ।

बैठ घोड़ा पानी पी

अटकन-चटकन दही चटाका,
राजा गए दिल्ली।
दिल्ली से लाए सात कटोरी,
एक कटोरी फूट गई।
राजा की टाँग टूट गई।
ये घोड़ा कहाँ जाता.....
पानी पीने.....
नईं जाने देते।
दिल्ली पुकार।
दिल्ली में कौन?
भाई।
भाई का नाम क्या?
अशोक।
बैठ घोड़ा पानी पी।

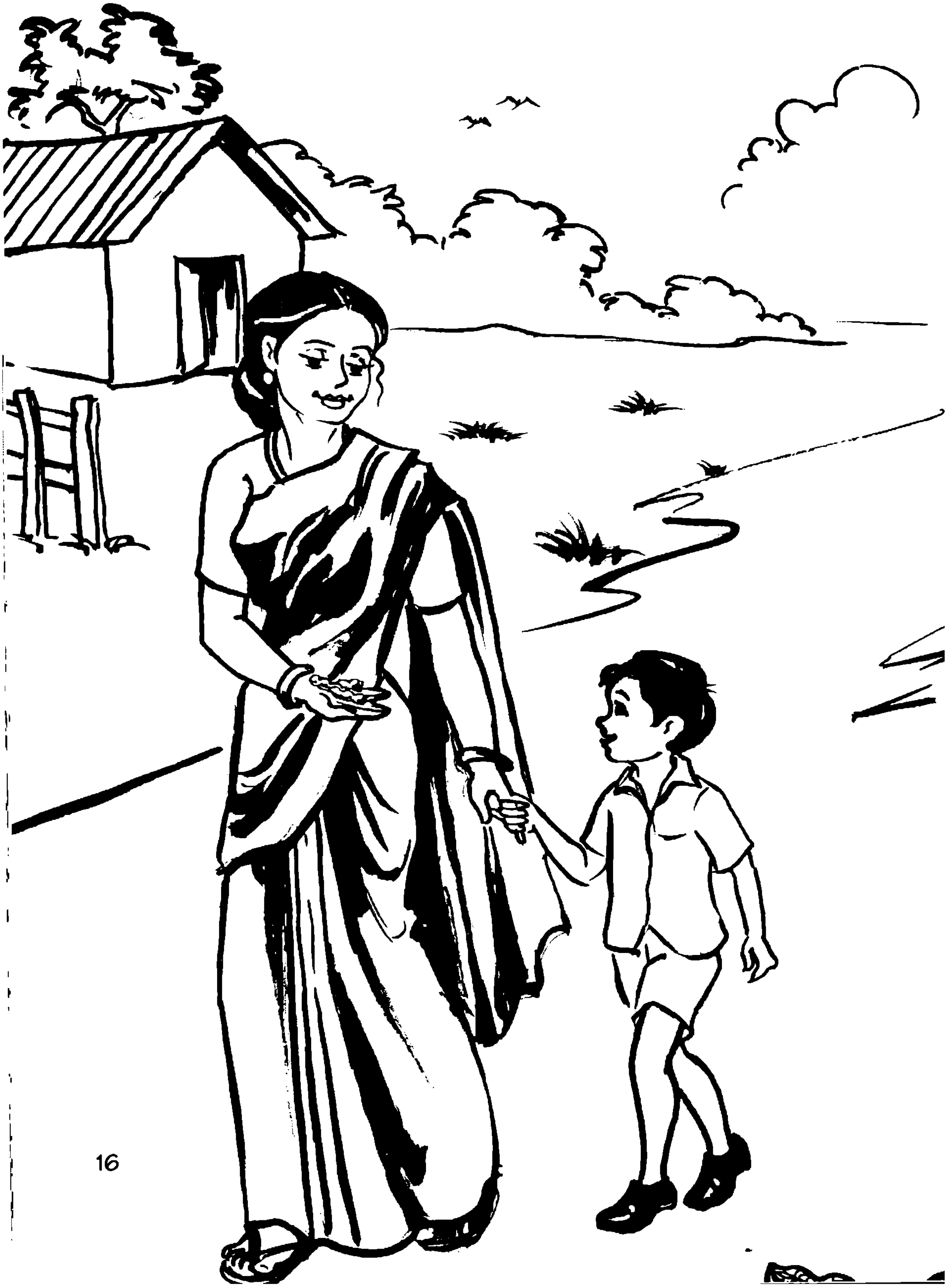

मम्मी

मम्मी, मम्मी भूख लगी,
खा ले बेटा मूँगफली।
मूँगफली में दाना नहीं,
हम तुम्हारे नाना नहीं।
नाना गए दिल्ली,
दिल्ली से लाए बिल्ली।
बिल्ली ने मारा पंजा,
चाय वाला गंजा।

चन्दा मामा

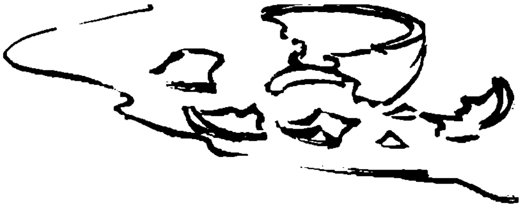

चन्दा मामा दूर के,
पुड़ी पकाओ पूर के।
आप खाओ थाली में,
मुन्ने को दो प्याली में।
प्याली गई टूट।
मुन्ना गया रूठ।
चन्दा के घर जाएँगे,
मुन्ने को मनाएँगे।

कट्टी

अट्टी बट्टी
नोन चबट्टी
बारह दिन की कट्टी।
कट्टी में जो
हमसे बोले
उसको मारो
दो सण्टी।

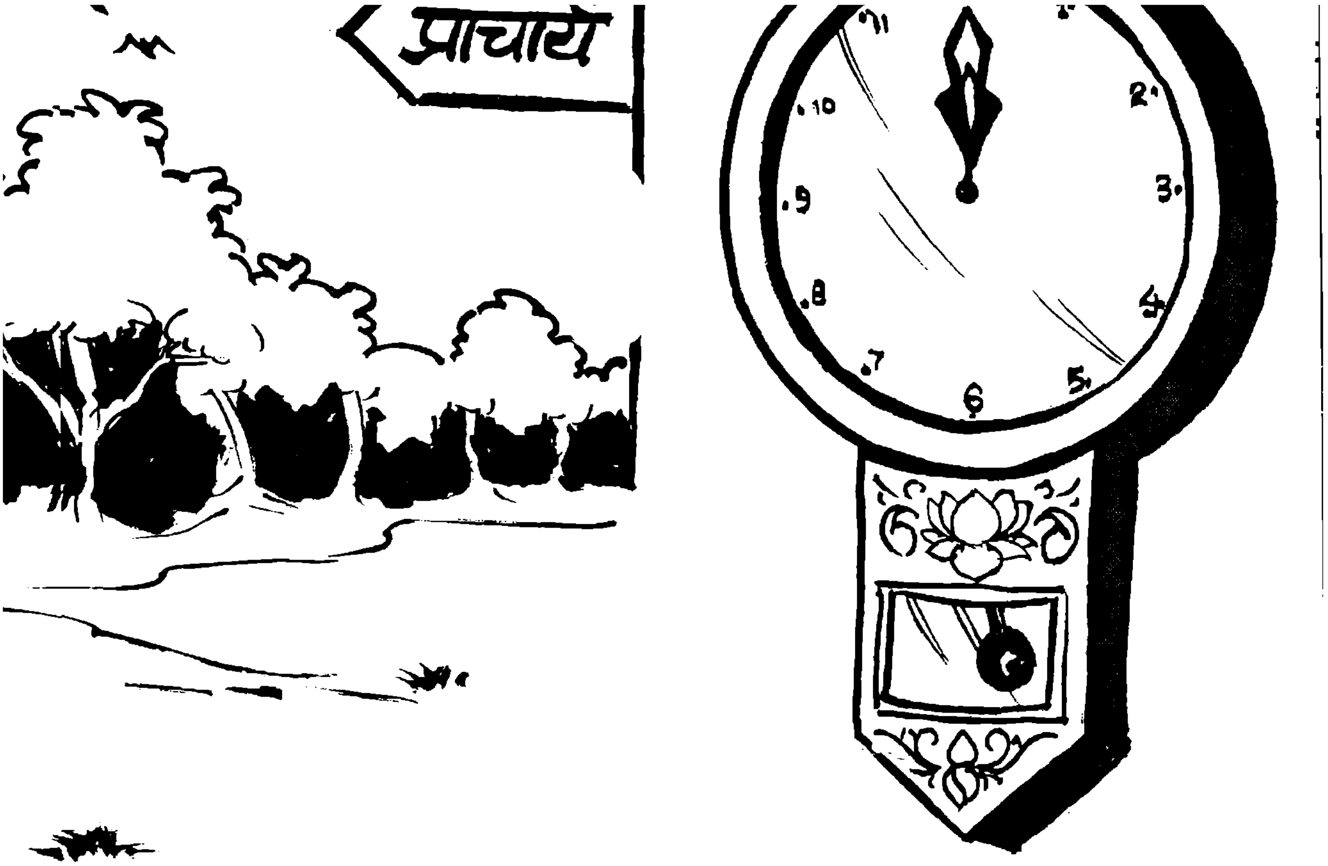

अद्दक-बद्दक

अद्दक-बद्दक चम्पा,
उसमें लगा घण्टा।
बारह बजे की छुट्टी में
बारह मिट्ठू बैठे थे।
एक मिट्ठू कच्चा,
वही रंग का पक्का।

उच्चक घोड़ी

डेढ़ टाँग की
उच्चक घोड़ी।
टाँग उठाकर
चल मेरी घोड़ी।
उच्चक घोड़ी
दान दे।
पूँछ पकड़कर
तान दे।

AV-906

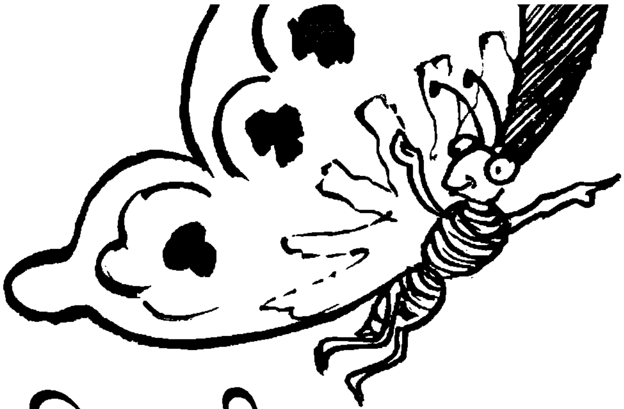

तितली

तितली उड़ी
बस पे चढ़ी
सीट न मिली
रोने लगी
ड्राइवर ने कहा
आ जा मेरे पास
तितली कहे
मैं तो चली आकाश।

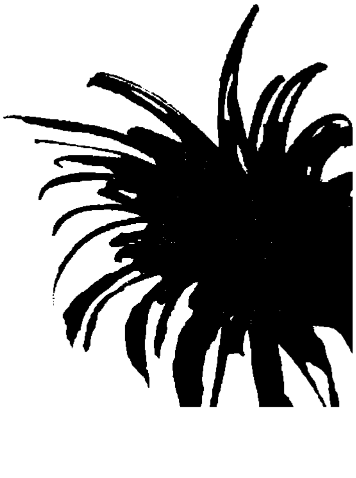

पानी बाबा

अल्ला मौला पानी दे,
पानी दे गुड़धानी दे।
मेंढक रानी पानी दे,
धान कोदों पकने दे।
पानी बाबा अइयो,
ककड़ी भुट्टा लइयो।

राम जी की चिड़िया

राम जी की चिड़िया,
राम जी का खेत।
खाओ री चिड़िया,
भर-भर पेट।
राम जी की चिड़िया आएगी,
हम दाना चुगाएँगे।
राम जी की चिड़िया आएगी,
हम पानी पिलाएँगे।
राम जी की चिड़िया आएगी,
फिर फुर्र-फुर्र उड़ जाएगी।

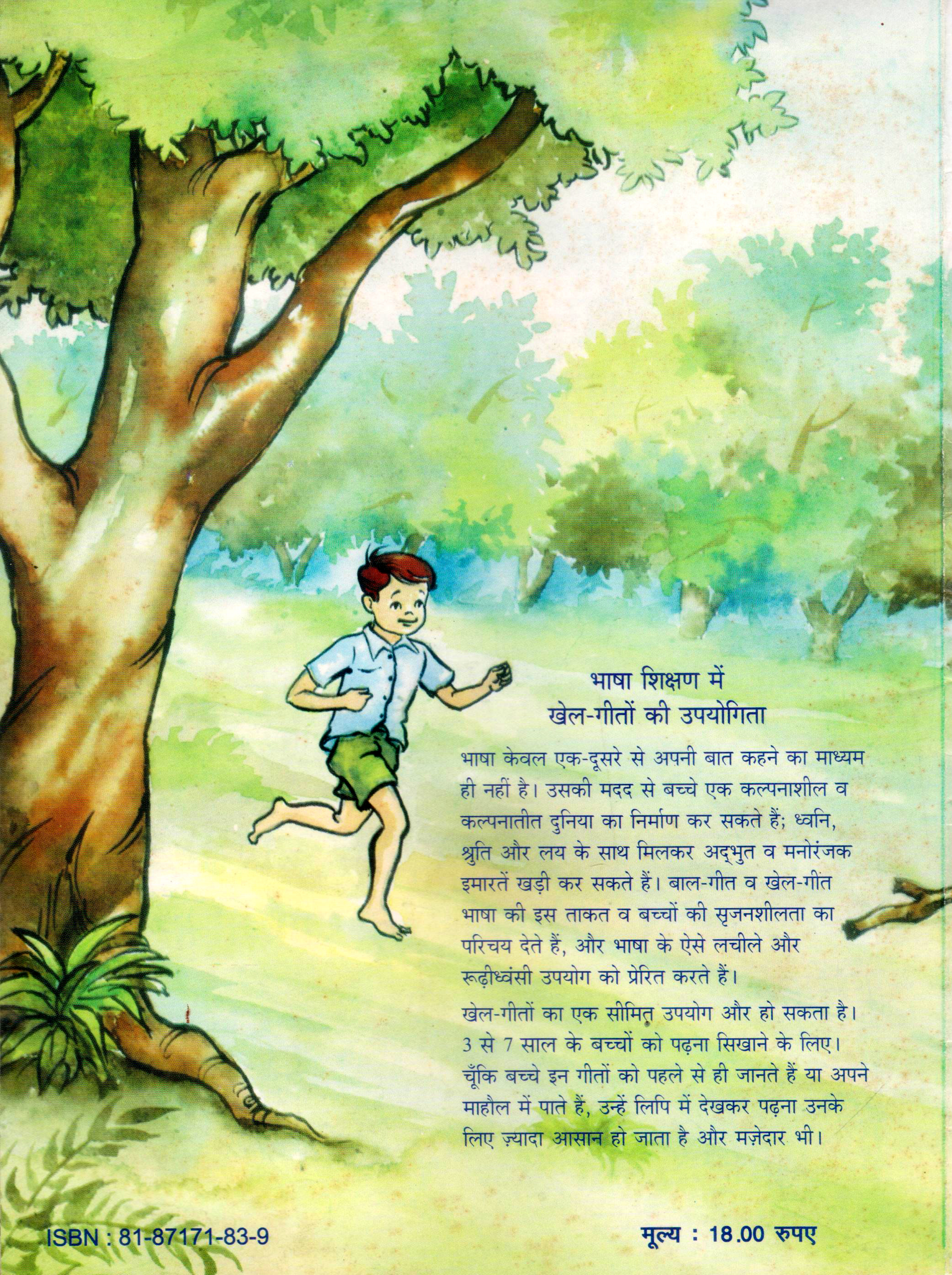

भाषा शिक्षण में खेल-गीतों की उपयोगिता

भाषा केवल एक-दूसरे से अपनी बात कहने का माध्यम ही नहीं है। उसकी मदद से बच्चे एक कल्पनाशील व कल्पनातीत दुनिया का निर्माण कर सकते हैं; ध्वनि, श्रुति और लय के साथ मिलकर अद्‌भुत व मनोरंजक इमारतें खड़ी कर सकते हैं। बाल-गीत व खेल-गीत भाषा की इस ताकत व बच्चों की सृजनशीलता का परिचय देते हैं, और भाषा के ऐसे लचीले और रूढ़ीध्वंसी उपयोग को प्रेरित करते हैं।

खेल-गीतों का एक सीमित उपयोग और हो सकता है। 3 से 7 साल के बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए। चूँकि बच्चे इन गीतों को पहले से ही जानते हैं या अपने माहौल में पाते हैं, उन्हें लिपि में देखकर पढ़ना उनके लिए ज़्यादा आसान हो जाता है और मज़ेदार भी।

ISBN : 81-87171-83-9

मूल्य : 18.00 रुपए